5

gekjs vkpk;Z

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने अपने विद्यालय के विषय में संस्कृत भाषा में दुसरों को कैसे बतायें, इसके विषय में जाना। इस पाठ में आप अपने आाचार्य का परिचय दुसरे लोगों को बाताना सीखेंगे। साथ ही सदाचार पर दो श्लोकों का अध्ययन भी आप करेंगे। जीवन में सदाचार का बहुत महत्त्व होता है। हमारे व्यक्तित्व के निमार्ण में हमारे आचार्य बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। उन्हीं के द्वारा हम सदाचार की शिक्षा ग्रहण करते हैं।

mís';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- अपने आचार्य का परिचय दे पाने में;
- आचार्य के कार्य के विषय में बता पाने में;

gekj vkpk;

- श्लोकों का उच्चारण कर पाने में; और
- संस्कृत के सरल वाक्यों का निर्माण और प्रयोग पाने में ।

5.1 eyikB

,"k% vLekde vkpk;A vLekde vkpk;L; uke lUnj% vfLrA

ये हमारे आचार्य है। हमारे आचार्य का नाम सुन्दर है।

o; ifrfnu r uekeA

हम प्रतिदिन उनको नमस्कार करते हैं।

d{kk & IV

fVIi.kh

vL; 0;ogkj% Lusge;% vfLrA

उनका व्यवहार बहुत प्रेममय है।

,"k% fofo/kku' fo"k;ku' ikB;frA

ये बहुत विषय पढ़ाते हैं।

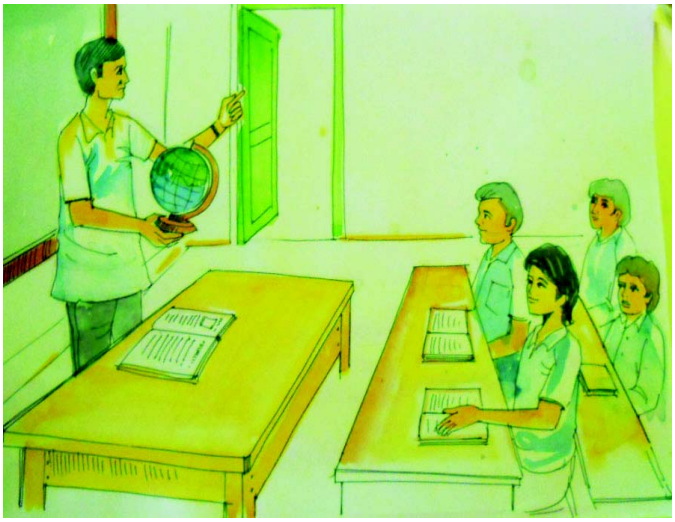

fVIi.kh

,"k% vLeku lLÑre vfi ikB;frA

ये हमें संस्कृत भी पढ़ाते हैं।

vLekde vkpk;% ijkidkjL; f'k{kk nnkfrA

हमारे आचार्य हमें परोपकार की शिक्षा देते है।

ijkidkj.k i.; HkofrA

परोपकार से पुण्य मिलता है।

ijihMuu iki HkofrA

दुसरों को पीडा देने से पाप होता है।

uhfr&'ykd

v"Vkn'ki jk.k"k0;kIL; opu};eA
ijkidkj% i.;k; ikik; ijihMueAA

'kCnkFk%

अष्टादश – अठारह

पुराणेषु – पुराणों में

व्यासस्य – व्यास के

वचनद्वयम – दो वचन

परोपकारः – दुसरों का उपकार

पुण्याय – पुण्य के लिए

परपीडनम् – दुसरों के पीडन से

18 पुराणों के अध्ययन के पश्चात आचार्य व्यास के दो ही वचन हैं – पुण्य के लिए परोपकार करना चाहिए और दुसरों को पीडा देने से पाप मिलता है।

v;i futijkofr x.kuk y?kpr Ike A
mnkjpfjrkuk r| ol|/kodVEcde AA

'kCnkFk%

निज – स्वयं का

गणनां – गणना करना

लघुचेतसाम् – अल्पबुद्धि युक्त

उहारचरितानां – उदान्त चरित्र युक्त

वसुधा – धरती

इव – तरह

कुटुम्बकम् – परिवार

gekj vkpk;l

यह मेरा है, यह दुसरों का है ऐसा सोचने और गणना करने वाले अल्पबुद्धि वाले होते हैं। सदाचारी व्यक्ति पूरी वसुधा को अपने परिवार की तरह मानते हैं।

ikBxr iz’u& 5-1

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –

1 मम आचार्यस्य नाम .... अस्ति ।

2 सः विविधान् .... पाठयति।

3 वयं प्रतिदिनम् तं .... ।

4 .... पुण्यं भवति।

5 परपीडनेन .... भवति।

vkiu D;k lh[kk\

- अपने आचार्य का परिचय।
- संस्कृत के सरल वाक्यों का निर्माण और प्रयोग।

ikBkr i'u

1. हमें दुसरों को हानि क्यों नहीं पहुचानी चाहिए?
2. आचार्य के कार्यो को लिखिए।
3. नीचे दिये गये चित्रों को देखकर संस्कृत में एक–एक वाक्यों का निर्माण कीजिए–

(क)

(ख)

mÙkjekyk

5.1

I. 1 सुन्दरः

2 विषयान्

3 नमामः

4 परोपकारेण

5 पापम्